अमेरिकी मदद से सांस्कृतिक विरासत का बचाव

आलेख एवं फोटो: एंगस मैक्डॉनल्ड

फोटो पत्रकारों से बात कीजिए तो वे यही कहेंगे कि उनकी नौकरी संसार की सब से अच्छी नौकरी है। और सच भी है– उनकी नौकरी सब से ज़्यादा तनख्वाह वाली या सुरक्षित भले ही न हो, यह सबसे अधिक संतोष देने वाली और रोमांचक ज़रूर है। और फिर भी कुछ काम ऐसे होते हैं जो दूसरों से एकदम ही अलग और बरसों में कभी मिलने वाले होते हैं। यह भी ऐसा ही एक काम था।

सितम्बर 2006 में नई दिल्ली स्थित अमेरिकी दूतावास ने मुझे दक्षिण और मध्य एशिया में 11 देशों में जाकर एम्बेसेडर्स फ़ंड फ़ॉर कल्चरल प्रिज़र्वेशन द्वारा प्रायोजित 24 परियोजनाओं का दस्तावेज़ीकरण करने के लिए कहा। इनमें से हर परियोजना अपने आप में एक विश्वस्तरीय

अजिना तेप्पा में 14 मीटर लंबी विश्राम करते बुद्ध की यह प्रतिमा मध्य एशिया में सुरक्षित बची अहम बुद्ध प्रतिमाओं में से एक है। यह ताजिकिस्तान में दुशान्बे स्थित सरकारी पुरावस्तु संग्रहालय में मौजूद है। वर्ष 2001 में इसका जीर्णोद्धार आंशिक तौर पर सांस्कृतिक संरक्षण के लिए अमेरिकी राजदूत कोष से मिले अनुदान की मदद से किया गया।

कोलकाता के उत्तर-पश्चिम में 140 किलोमीटर दूर विष्णुपुर में एक व्यक्ति एक धार्मिक स्थल के पास से गुजरता हुआ। विष्णुपुर आर्किटेक्चर, कला एवं शिल्प परंपरा के अनेक रूपों का गढ़ रहा है। वर्ष 2005 में सांस्कृतिक संरक्षण के लिए अमेरिकी राजदूत कोष से से मिले अनुदान के बूते इंडियन नेशनल ट्रस्ट फ़ॉर आर्ट एंड कल्चरल हैरिटेज ने शहर की कला परंपरा को बचाने के लिए व्यापक योजना बनाई।

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक कोष थी।

मैं भला ''ना '' क्यों कहता?

अक्टूबर के मध्य तक मैं भूतपूर्व सोवियत गणतंत्रों कज़ाकिस्तान, किरगिज़िस्तान, तुर्कमेनिस्तान और ताजिकिस्तान के तूफानी दौरे पर निकल पड़ा था। इसके साथ ही मुझे अफ़गानिस्तान और पाकिस्तान भी जाना था। उसके बाद मैं नेपाल, श्रीलंका, मालदीव और बांग्लादेश गया। अंत में पश्चिम बंगाल में विष्णुपुर और सिक्किम में गंगटोक परियोजनाओं का दस्तावेज़ीकरण करके मैं दिल्ली लौट आया।

इस दौरान मैं रेशम मार्ग के अधबिसरे खंडहर ढूंढ रहे एक संरक्षण वास्तुविद और दो पुरातत्वशास्त्रियों के साथ कज़ाकिस्तान में हज़ारों किलोमीटर की यात्रा कर चुका था, काठमांडो के दरबार चौक में हाल ही में पुनर्स्थापित कालभैरव की प्रतिमा की पूजा करते हिंदू भक्तों के बीच घूम चुका था और बांग्लादेश के ग्रामीण अंचल में देर रात बाउल गायकों को ईश्वर के विरह और मिलन के गीत गाते सुन चुका था।

मैंने कई बार मस्जिदों में जुमे की नमाज़ पढ़ते देखीं। पहला मौका काबुल, अफ़गानिस्तान में 1990 के दशक के युद्ध में ध्वस्त होने के बाद पुनर्निर्मित 17वीं सदी की एक दुर्लभ देवदार की लकड़ी से बनी मस्जिद में मिला। वर्दी पहने एक सैनिक ने जूते तो मस्जिद के बाहर उतार दिए लेकिन अपनी बंदूक अंदर ले आया। कुछ हफ़्ते बाद, एक उपमहाद्वीप और एक महासागर के पार मैंने मालदीव की राजधानी माले की ईद मस्जिद में समुद्रतट पर मौज-मस्ती करते पहनी जाने वाली कमीजें पहने लड़कों को नमाज़ पढ़ते देखा। इस मस्जिद की दीवारें महीन पच्चीकारी किए मूंगे से बनी हैं और हाल ही में उन पर से सदियों से जमी मैल और गर्द हटाई गई है।

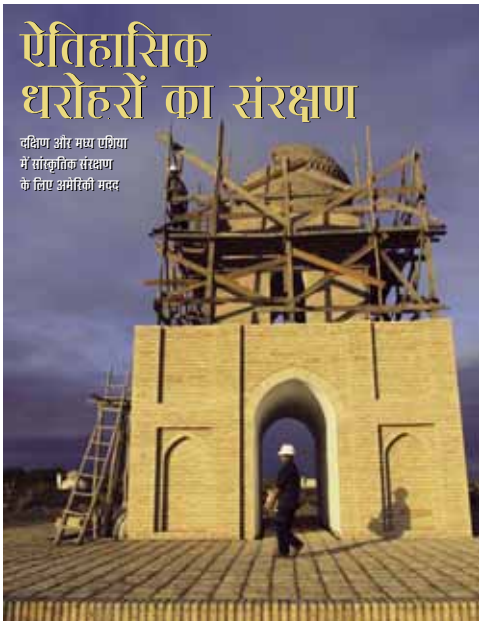

दक्षिण एवं मध्य एशिया में सांस्कृतिक संरक्षण के लिए अमेरिकी राजदूत कोष से मिले अनुदान के ज़रिये चली परियोजनाओं के बारे में वर्ष 2007 में शरत मौसम में एक पुस्तिका जारी की गई। इसमें एंगस मैक्डॉनल्ड का आलेख और चित्र हैं। इसके आवरण पर तुर्कमेनिस्तान के दशोगज़ में मौजूद 14 मीटर ऊंची अक सराय डिंग टॉवर का चित्र है।

वर्ष 2001 में दस लाख डॉलर के बजट से शुरू किए गए एम्बेसेडर्स फ़ंड फ़ॉर कल्चरल प्रिज़र्वेशन ने संसारभर में 379 परियोजनाओं को सहायता के रूप में नौ लाख डॉलर वितरित किए हैं। इसके तहत विकासशील देशों में दस से पचास हज़ार डॉलर तक के अनुदान वितरित किए जाते हैं। मुझे विदेश मंत्रालय के दक्षिण और मध्य प्रभागों में वित्तपोषित परियोजनाओं का दस्तावेज़ीकरण करने का काम दिया गया था।

इस कार्यक्रम की एक प्राथमिकता उन समुदायों का लाभाविन्त होना भी है जिनमें परियोजनाएं स्थित हैं। व्यापार, धातुकर्म और घुमंतू संस्कृति के गढ़ रहे कज़ाकिस्तान की राजधानी बिश्केक में स्थित कज़ाकिस्तान राजकीय संग्रहालय धातु से बनी बेशकीमती सामग्रियों का ज़बर्दस्त संग्रह है। इसका सबसे महत्वपूर्ण आकर्षण एक हूण राजकुमारी के मकबरे से प्राप्त 156 सोने के बने सामान हैं जिनमें एक मुकुट, हरित मणि और अम्बर से जड़ा एक चन्द्रहार और एक जीवन्त सा दिखता मुखौटा है। करीब दो हज़ार वर्ष पुराना यह कला संग्रह 1958 में ढूंढा गया था। यह सब सामग्री दुनियाभर में प्रदर्शित की जा चुकी है लेकिन पर्याप्त अलमारियां और सुरक्षा उपकरण उपलब्ध न होने के कारण आज तक बिश्केक में ही प्रदर्शित नहीं हो

नीचे: पुराने काबुल की 17वीं सदी की मुल्ला महमूद मस्जिद में नमाज पढ़ता एक श्रद्धालु। अफ़गानिस्तान में 1990 के दशक की लड़ाई के दौरान यह मस्जिद क्षतिग्रस्त हो गई थी। इसके दुर्लभ देवदार ढांचे को बचाने के लिए सांस्कृतिक संरक्षण के लिए अमेरिकी राजदूत कोष के अनुदान के जरिये इसका जीर्णोद्धार किया गया। वर्ष 2004 में यह मस्जिद फिर से लोगों के लिए खुल गई।

पाईं। यह बहुमूल्य संग्रह दूसरे विश्वयुद्ध के समय की मशीनगनों और गोला-बारूद के साथ संग्रहालय के तहखाने में एक तिजोरी में ठुंसे हुए थे।

संग्रहालय की भंडारण निदेशक एकिलै शारशेनालिवा कहती हैं, ''यह संग्रह जापान, फ्रांस और इटली में प्रदर्शित होकर दर्शकों में भारी रुचि जगा चुका है, लेकिन हमारी पहली प्राथमिकता इन्हें अपने लोगों को दिखाना होनी चाहिए।''

2006 में एम्बेसेडर्स फ़ंड से प्राप्त अनुदान से संग्रहालय तापमान और नमी को नियंत्रित रखने वाली अलमारियों में इस संग्रह को सुरक्षित, स्थिर स्थितियों में प्रदर्शित कर पाया। अनुदान में सबसे महत्वपूर्ण सामग्रियों की अनुकृतियां तैयार करवाने का भी प्रावधान है ताकि मूल सामग्री से कम से कम छेड़छाड़ करनी पड़े।

2006 में ही तुर्कमेनिस्तान में अक सराय डिंग मीनार के पुनरोद्धार के लिए भी अनुदान दिया गया। पुरातत्व विज्ञानियों का अनुमान है कि ग्यारहवीं या बारहवीं सदी का यह स्मारक कभी रेशम मार्ग की किसी सराय का दरवाज़ा था जिसे तीन मंजिला इसलिए बनवाया गया ताकि व्यापारी कारवां रेगिस्तान में भटक न जाएं। लेकिन उज़्बेकिस्तान की सीमा से सटे इस सुदूर प्रांत के लोग मानते हैं कि मीनार एक सामन्त ने अपनी उस बेटी की याद में बनवाई थी जो कुंआरी ही मर गई थी। कुंआरी लड़की की पवित्रता की स्मृति से जुड़ी होने के कारण आज मीनार को तीर्थस्थान का सम्मान प्राप्त है। लोग यहां विवाह या संतान प्राप्ति के लिए प्रार्थना करते हैं।

दाएं: मालदीव की राजधानी माले में 18वीं सदी की ईद मस्जिद। इस मस्जिद में नक्काशी मूंगे के ब्लॉकों की है। वर्ष 2004 में सुनामी के चलते हुए नुकसान के बाद इनकी हालत और खराब होने लगी। वर्ष 2005 में राजदूत कोष से मिले अनुदान के जरिये इसका जीर्णोद्धार किया गया।

दाएं: बुनकर क्षतिग्रस्त तुर्कमानी गलीचों को फिर बुनने के मुश्किल काम को अंजाम देते हुए। एक दिन में सिर्फ आधा वर्ग सेंटीमीटर गलीचा ठीक हो पाता है। तुर्कमेनिस्तान के अश्गाबात स्थित राष्ट्रीय गलीचा संग्रहालय ने लगभग 70 गलीचों की मरम्मत कराई है। इनमें से आधे गलीचे राजदूत कोष के अनुदान के जरिये ठीक किए गए। यह काम अभी शुरू ही हुआ है क्योंकि 500-600 गलीचों की मरम्मत होनी है।

बाएं: खोरज़्म में 1172 से 1200 तक शासन करने वाले सुल्तान तिकेश का 30 मीटर ऊंचा मकबरा। तुर्कमेनिस्तान के अर्गेंच में यह मंगोल पूर्व वास्तुकला का बेहतरीन नमूना है। राजदूत कोष के अनुदान के जरिये इसकी दीवारों और एक गुंबद को फिर से बनाने और मरम्मत के काम में मदद मिली। जीर्णोद्धार के नौसिखिया प्रयास और समय के साथ इसकी हालत खराब हो रही थी।

राजदूत कोष से वर्ष 2006 में मिले अनुदान के बूते किरगिज़ सरकारी संग्रहालय ने अलमारियां और आधुनिक सुरक्षा अलार्म खरीदे। इससे संग्रहालय में मौजूद उत्कृष्ट आभूषणों और कलाकृतियों को किरगिज़ लोगों के लिए प्रदर्शित करना संभव हो पाया। यह संग्रह यूरोप और जापान में प्रदर्शित किया जा चुका है लेकिन स्थानीय स्तर पर नहीं क्योंकि संग्रह के प्रदर्शन और सुरक्षा के पर्याप्त इंतज़ाम नहीं थे।

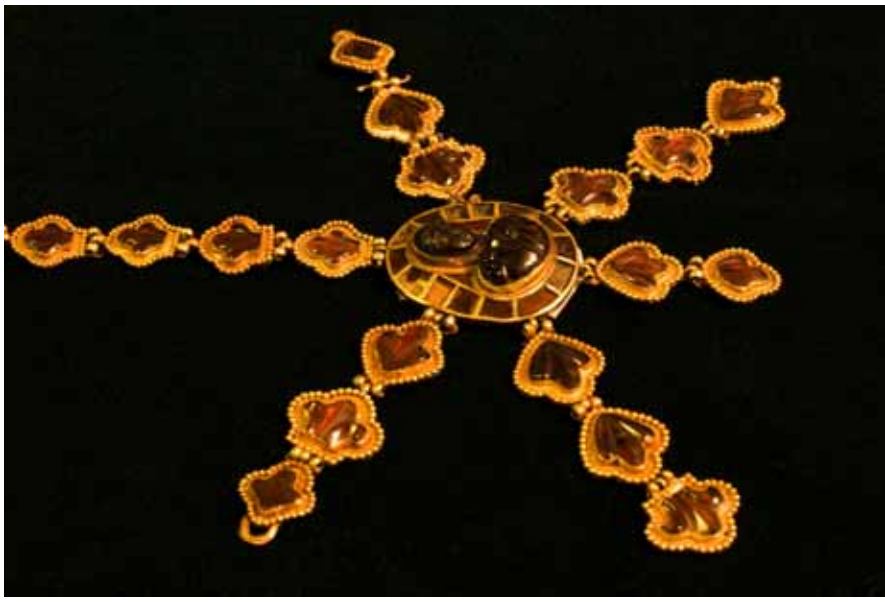

बीसवीं सदी के आरम्भ में जब मीनार ढहने को थी, एक धार्मिक नेता ने स्थानीय लोगों को प्रेरित किया कि वे इस के आधार के आसपास मिट्टी जमा दें ताकि इसे और नुकसान न पंहुच सके। सौ साल बाद एम्बेसेडर्स फ़ंड से मिली सहायता से आधार को पूरी तरह दोबारा बनाया गया है। ऊपर की मंजिल और दोहरे गुम्बद की मरम्मत का काम अभी चल ही रहा है।

इतिहास के अध्यापक इल्यास पाल्ताएव बहुत खुश हैं कि समुदाय की श्रद्धा के केंद्र, विरासत के इस हिस्से को विस्मृति के गर्त में जाने से बचा लिया गया। ''हमारे बुजुर्ग तो बहुत ही खुश हैं क्योंकि वह इसे परम्परा के एक अंग के रूप में देखते हैं... मैं भी अपने छात्रों को इतिहास और परंपरा से परिचित करवाने के लिए यहां लाता हूं।''

एम्बेसेडर्स फ़ंड फ़ॉर कल्चरल प्रिज़र्वेशन परियोजनाएं स्मारकों और संग्रहालयों तक ही सीमित नहीं हैं। चुनाव अभियान के दौरान राष्ट्रव्यापी हड़तालों के कारण दो दिन में पूरी की गई बांग्लादेश यात्रा के दौरान मुझे ढाका स्थित अमेरिकी दूतावास के जॉन सेब्रा और सबरीन रहमान के साथ कला की जीवित परम्परा को बनाए रखने में सहायक दो परियोजनाएं देखने का मौका मिला।

ढाका से कार से सात घंटे का सफर तय करके हम एक ग्रामीण मिडिल स्कूल में पहुंचे जहां पल्ली बाउल समाज उन्नयन संस्था बाउल गीतों का कार्यक्रम प्रस्तुत कर रही थी। संस्था का गठन घुमंतू गायकों के बाउल समुदाय

के कौशल को बचाए रखने के लिए किया गया है। बाउल गायक प्रेम और विरह के भक्ति पद गाते कई तरह के वाद्ययंत्र बजाते गांव-गांव घूमते हैं। टेलिविज़न और रिकॉर्ड किए संगीत की व्यापक उपलब्धि के कारण धीरे-धीरे बाउल गान के प्रति लोगों का आकर्षण कम होता जा रहा है।

एम्बेसेडर्स फ़ंड से मिले अनुदान से संस्था ने बाउल गीतों को रिकॉर्ड करके लिख लिया, उनके वाद्ययंत्रों के नमूने जमा किए और ढाका और सुदूर जिलों के 60 विद्यालयों में बाउल गान कार्यक्रम आयोजित करवाए। इस परियोजना के अंतर्गत अनुभवी गायक अपने कौशल बाउल गायकों की नई पीढ़ी को सौंप सके और मुश्किलों को झेल रहे बाउल परिवारों को सहायता उपलब्ध करवाई जा सकी।

अगले दिन ढाका लौटते हुए हम ढाका से 40 किलोमीटर पहले धमराई गांव में रुके जो ढलाई से धातु के शिल्प तैयार करने की दो हज़ार वर्ष पुरानी परम्परा को बनाए रखने वाला देश का आखिरी गांव है। सुकांत बनिक धातुशिल्पी परिवार की पांचवीं पीढ़ी के सदस्य हैं। उन्होंने 2003 में इनिशिएटिव फ़ॉर द प्रिज़र्वेशन ऑफ़ धमराई मेटल कास्टिंग का गठन किया जिसे इस शिल्प परम्परा को बनाए रखने के लिए एम्बेसेडर्स फ़ंड का अनुदान प्राप्त हुआ।

ढलाई पद्धति से मूर्तियां बनाने की प्रक्रिया में शिल्पी मोम से प्रतिमा का प्रारूप बनाकर उस पर मिट्टी का लेप कर देते हैं। मिट्टी के सांचे को पकाने पर मोम गल जाता है और सांचे में पिघली हुई धातु उंडेल दी जाती है। ठंडा होने पर सांचा तोड़कर मूर्ति निकाल कर घिस-तराश ली जाती है। इस तरह बनी हर प्रतिमा अपनी किस्म की एक ही होती है। अधिकांश समृद्ध हिंदू परिवारों के भारत चले जाने और बड़े पैमाने पर उत्पादित की जाने वाली सस्ती मूर्तियों की भरमार के कारण धातु शिल्प की यह परम्परा विलुप्ति के कगार पर पहुंच रही थी।

एम्बेसेडर्स फ़ंड फ़ॉर कल्चरल प्रिज़र्वेशन से प्राप्त अनुदान से बानिक ने अपनी कार्यशाला के लिए नए शिल्पियों को प्रशिक्षित किया, लॉस्ट वैक्स प्रक्रिया से मूर्ति ढलाई के बारे में एक डी.वी.डी. बनाया और ढाका में एक प्रदर्शनी लगाई।

वह बताते हैं, ''प्रदर्शनी के बाद बहुत से लोग हमारा काम देखने आए। पहले तो हमारे पास चार-पांच कारीगर ही थे जो छोटी मूर्तियां बनाते थे और काम बहुत अच्छा भी नहीं होता था। अब पहचान मिलने लगी है तो कारीगरों

बाएं: राजदूत कोष से वर्ष 2003 में मिले अनुदान के चलते कारीगरों को प्रशिक्षण मिला और इसी तरह की तकनीक का इस्तेमाल करने वाले धातु कारीगरों के साथ अपनी दक्षता का आदान-प्रदान करने का मौका भी मिला।

ऊपर: हाथों से धातु की ढलाई की 2000 साल पुरानी परंपरा का आधुनिक उदाहरण। यह परंपरा अब बांग्लादेश के माणिकगंज जिले के धमराई में सिर्फ 30 गांवों में बची है।

ऊपर: वर्ष 2005 में राजदूत कोष से मिले अनुदान से बांग्लादेश के बाउल गायकों को लाभ हुआ। घूम-घूम कर गीत गाने वाले ये संगीतकार सूफी संगीत और ईश्वर प्रेम के गीत गाने की एक हज़ार साल पुरानी परंपरा को बचाए हुए हैं। बाउल गायकों को सैकड़ों गानों को रिकॉर्ड करने और स्कूलों में जाने के लिए अनुदान दिया गया।

मतारा, श्रीलंका में एक महिला पुर्तगाली औपनिवैशिक काल की इमारत के पास से गुजरते हुए। यह इमारत सुनामी में क्षतिग्रस्त हो गई थी। राजदूत कोष ने वास्तुकला के लिहाज से अनूठे इस शहर के सर्वेक्षण के काम को प्रायोजित किया जिससे कि जीर्णोद्धार का काम किया जा सके। यहां पर स्थानीय वास्तुकला के अलावा डच, पुर्तगाली और ब्रिटिश ढंग से बनी इमारतें भी हैं।

में अच्छे से अच्छा काम करने की होड़ लगी रहती है। ''

मैं यात्रा के अंतिम चरण में सिक्किम पहुंचा जहां एम्बेसेडर्स फ़ंड के अनुदान से गंगटोक के नामग्याल इंस्टिट्यूट ऑफ़ तिब्बतोलॉजी ने अपने पुस्तकालय और संग्रहालय को बढ़ाया है। 1958 में स्थापित इस संस्थान में करीब 45,000 तिब्बती पांडुलिपियां हैं जो अपनी तरह का संसार का तीसरा सबसे बड़ा संग्रह है। अनुदान के कारण संस्थान की छत को जलरोधी बनाना, बिजली की तारें फिर से डलवाना और नमी सोखने के यंत्र लगवाना संभव हो पाया। इनके बिना सिक्किम की आर्द्र जलवायु में पांडुलिपियां सुरक्षित न रह पातीं। संस्थान के भूतल पर स्थित संग्रहालय में भी कला सामग्रियों को बेहतर ढंग से प्रदर्शित करने की व्यवस्था की गई है जहां भारत और दुनियाभर के जिज्ञासु तिब्बती कलाकृतियों को देखने आते हैं।

***एंगस मैक्डॉनल्ड** स्वतंत्र पत्रकार और फोटोग्राफर हैं और अब मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया में रहते हैं।*

कृपया इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजिए।

बाएं: विष्णुपुर परंपरा की सिल्क साड़ी बनाने के लिए कताई करता एक बुनकर। यह परंपरा आज भी जारी है।

नीचे: सिक्किम के नामग्याल इंस्टीट्यूट ऑफ़ तिब्बतोलॉजी में नई अलमारियों ओर प्रकाश व्यवस्था के कारण दुर्लभ प्रतिमाओं और पारंपरिक कलात्मक वस्तुओं को बेहतर तरीके से प्रदर्शित करना संभव हो पाया। राजदूत कोष से मिली मदद के चलते संग्रहालय में कला संग्रह का प्रदर्शन तो बेहतर हुआ ही, साथ ही इमारत को वाटरप्रूफ़ बनाने और तारों को फिर से बिछाने में भी मदद दी गई।